TUM MERI CRUSH HO

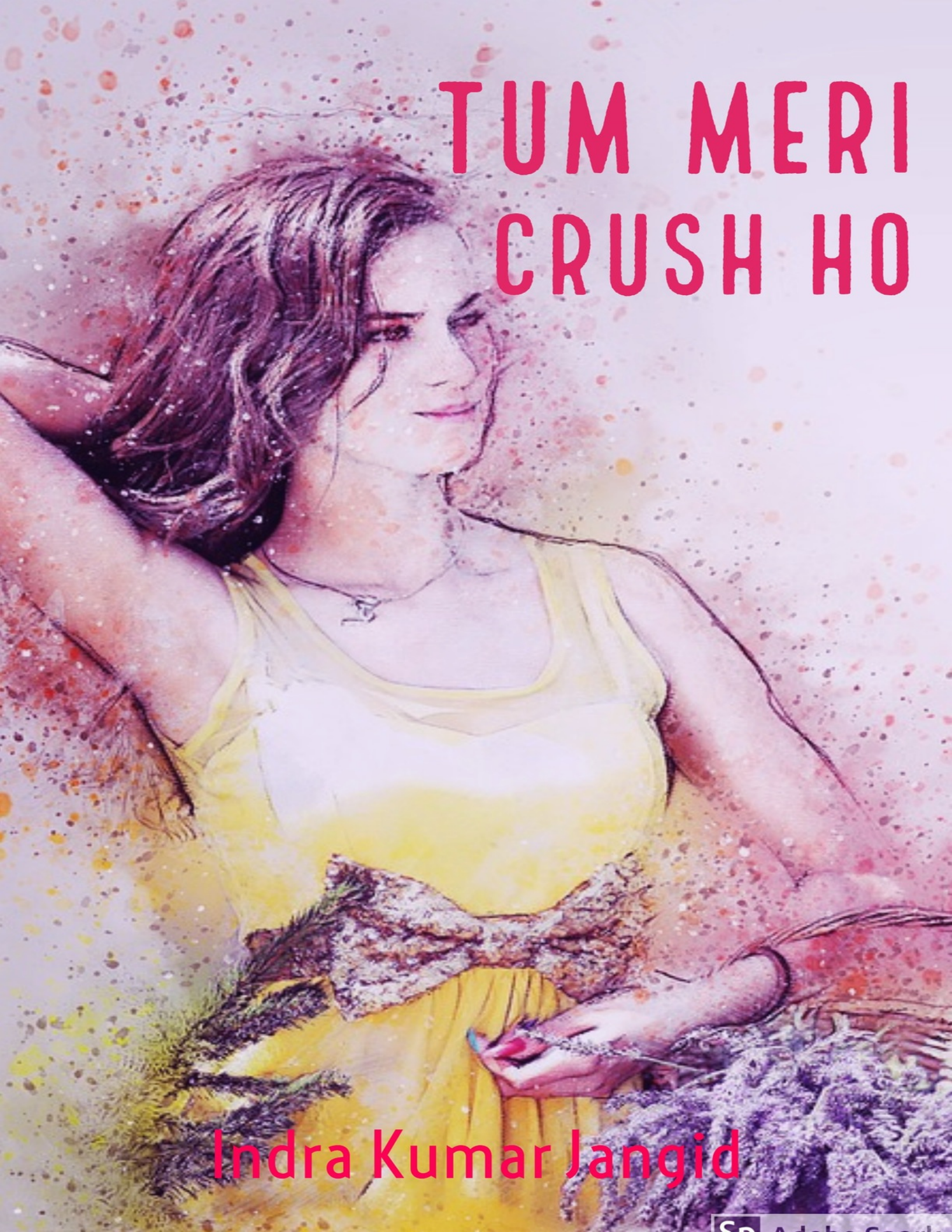

Indra Kumar Jangid

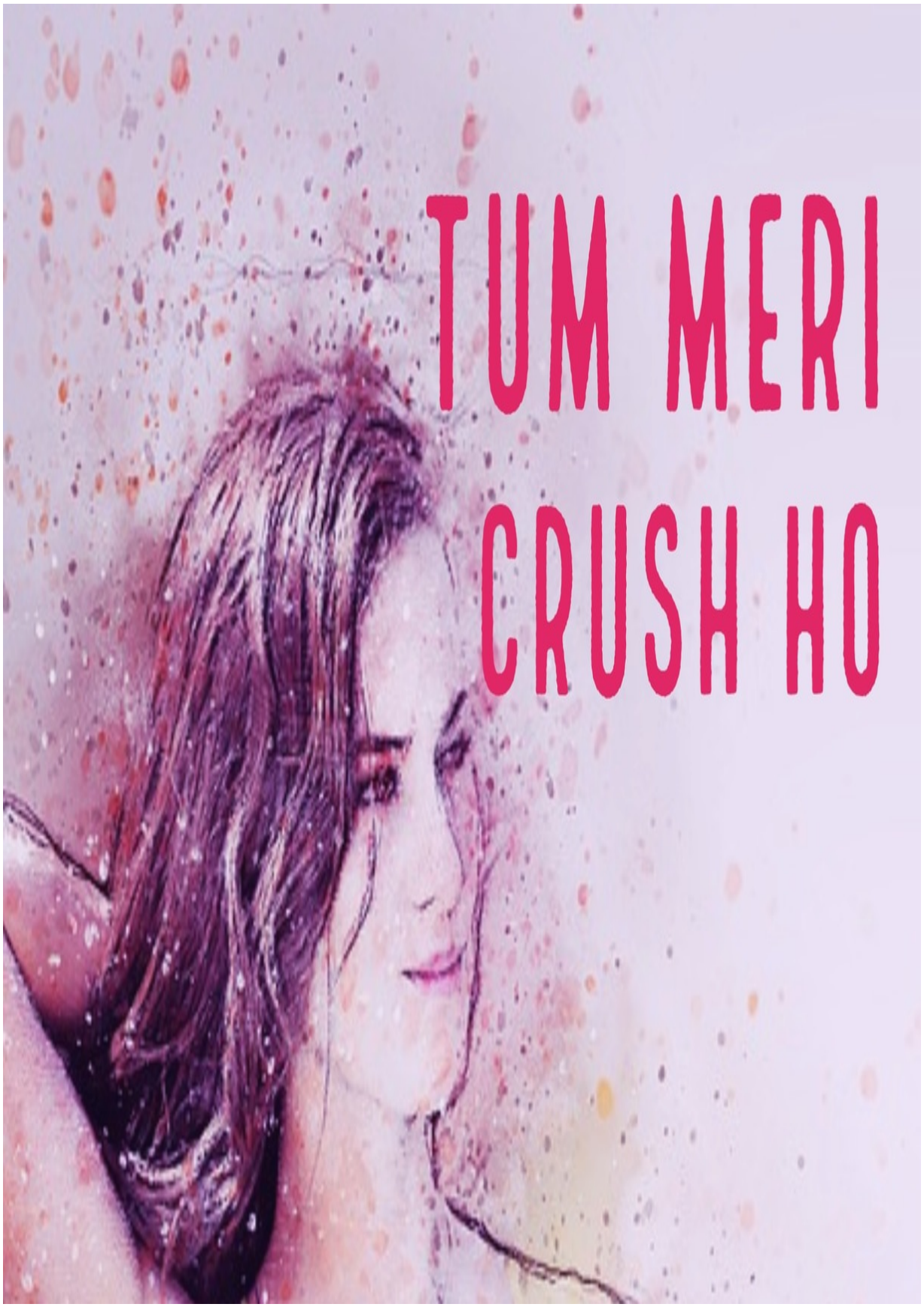
TUM MERI
CRUSH HO

Indra Kumar Jangid

तुम मेरी Crush हो

इन्द्र कुमार जांगिड़

माता-पिता के लिए !!

और उनके लिए जो पिज्जा के आखिरी टुकड़े के लिए छिना-झपटी करते है|

आदित्य कट्टा और अन्नू बुनकर

मेरा नाम अरुण है | जब मैं 18 साल का था तब मेरी लाइफ पूरी तरह बदल गयी | मैं जानता हूँ की आप लोग सोच रहे होंगे कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ | तो आप खुद ही देख लीजिये | एक लड़की जिसका नाम मिताली था वो मेरी क्रश बनी|

तो पूरी कहानी इस तरह से है .....

विषय-सूची

1. प्यार की शुरुआत
2. मम्मी की डांट
3. सफर की शुरुआत
4. रेल का सफर
5. पेपर की कठिनाई
6. प्यार का इजहार

1. प्यार की शुरुआत

हम सभी के जीवन में एक इंसान ऐसा जरूर होता है। जिसके न होने से हमारा होना ही

अर्थहीन लगने लगता है। अब वो इंसान आपका कोई दोस्त हो सकता है या और कोई।

और इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ता की आप छोटी- छोटी बात पर बहस करते हो या कही बार नाराज़ भी हो जाते हो।

लेकिन ऐसा इंसान जरूर होता है , जिसको आप दूसरा मौका देने के लिए तैयार होते है और उसके लिए कुछ भी समझौता कर लेते है।

आज मेरे कॉलेज का पहला दिन था । नए-नए दोस्तों से मिल रहा था ।
थोड़ा सा डरा हुआ और थोड़ा सा उत्साहित की 'ना जाने कैसे टीचर होंगे ?' और ऐसे ही कही सवाल लेकर में कॉलेज पहुंच गया ।

मैं पहले ही दिन लेट था। जैसे तैसे क्लास रूम में पंहुचा तो देखा की टीचर पहले ही आ चुके है। सब मुझे ऐसे देख रहे थे जैसे कच्चा खा जायेंगे।

मैं जाकर पीछे बैठ गया और देखने लगा कौन क्या कर रहा है। पहली क्लास केमिस्ट्री की थी। टीचर ने पढ़ाना वापस शुरू कर दिया ।

मैंने ध्यान लगाना शुरू ही किया था कि तभी मेरी नज़र एक लड़की पर पड़ी, जिसने पिंक कलर का टॉप पहना था और चश्मा भी लगा रखा था।

बाकि सब से अलग वो चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट के साथ समझ रही थी | अब मेरा ध्यान बार बार उसी लड़की की तरफ जा रहा था |

जिससे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि टीचर क्या पढ़ा रहा |
मुझे डर ये भी लग रहा ता कि अगर टीचर ने कोई सवाल पूछ लिया तो पहले ही दिन बैंड बज जाएगी |

इससे बचने के लिए मैने अपना सिर नीचे किया और कुछ लिखने का नाटक करने लगा |

"मेरा ध्यान वापस उस लड़की की तरफ गया !"
“हाहा हा” वो अभी भी समझ ही रही थी और मैं जैसे उसको समझने की कोशिश कर रहा था |

“उफ़! इतना भी क्या समझ रही है वो " मैंने अपने आप से कहा |
" चलो आज पहला दिन है तो इतना ही काफी है " टीचर ने हंसकर कहा |

सभी बाहर जाने लगे तो मै भी जल्दी से बाहर चला गया |

बाहर जाकर खड़ा हुआ था की तभी वो लड़की अपनी फ्रेंड्स के साथ बाहर आयी |

"मिताली रुको !" पीछे से एक लड़की जोर से बोली|
“अच्छा, तो इसका नाम मिताली है" मैंने अपने आप से मन में हसते हुए कहा |

मैं मिताली के पास गया|
"हेलो, क्या तुम आज के नोट्स दे सकती हो ?"

" सॉरी, मैं खुद नहीं उतार पायी पुरे तो मेरा ध्यान समझने में ही था" मिताली ने कहा |
"जितने है उतने दे सकती हो क्युकी मैं लेट आया था| “

" ये लो, इसमें यहां से लेकर यहां तक पूरा आज का है " उसने कहा |
मैंने जल्दी-जल्दी उतरना शुरू कर दिया |

"थैंक यू " मैंने उसकी नोटबुक देते हुए कहा |
"वेलकम !!"

इसके बाद 2 क्लास लेकर मैं घर आ गया |

जैसे ही घर पंहुचा मम्मी ने पूछा की पहला दिन कैसा रहा?
“अच्छा ही था” मैंने हँसते हुआ कहा |

2. मम्मी की डांट

मैं काफी थक चुका था तो आते ही खाना खाकर सो गया | जब उठा तो सोचने लगा की मिताली से बात कैसे की जाये |
फिर मैंने उसको फेसबुक पर ढूंढ़ना शुरू किया |

ये काम सुनने में जितना आसान लगा उससे कहीं ज्यादा मुश्किल था क्युकी जब मैंने ढूंढ़ना शुरू किया तो पूरा फेसबुक मिताली के नाम से भरा पड़ा था |
मुझे उसका सरनेम भी तो नहीं पता था |

"यस, यह रही मिताली की आईडी !" मैंने राहतभरी सांस भरते हुए कहा|

मैंने रिकवेस्ट भेज दी बिना ये सोचे की पता नहीं रिकवेस्ट एक्सेप्ट करेगी भी की नहीं |
मैं कहा रुकने वाला था...हाहा!!

"करेगी तो कर लेगी !" मैंने अपने आप को सांत्वना देते हुए कहा |

अगले दिन मैं कॉलेज के लिए जल्दी ही तैयार हो गया |

"बेटा आज इतनी जल्दी जाओगे?" मम्मी ने पूछा | "हां मम्मी कल भी लेट हो गया था इसलिए पहले चला जाता हूँ |"

मैं कॉलेज बस में बैठा और बाहर की और देख़ते हुए सोचने लगा |
"आज में उससे बात करूंगा और सब कुछ पूछ लुंगा | ये पूछूंगा ,वो पूछूंगा " ऐसी ही बातें दिमाग में चल रही थी |

मैंने अपने न्यू फ्रेंड्स विजय और अमित फ़ोन किया को कि वो आ रहे है या नहीं |

मैंने फेसबुक चेक किया तो देखा की उसने मेरी रिक्वेस्ट एक्सेपट कर ली | मेरे चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान देखी जा सकती थी |

मैं कॉलेज पहुंच गया तो देखा कि अभी तक कुछ ही स्टूडेंट्स आये है | मेरे न्यू फ्रेंड्स विजय और अमित भी नहीं दिख रहे |
लेकिन मेरी नज़रे तो किसी और कि ही तलाश कर रही थी |

"जी हां , मिताली !" वो भी नहीं दिख रही थी | तभी मैं बैठ गया और इंतज़ार करने लग गया |

तभी विजय भी कॉलेज आ गया | मैंने उससे भी पूछा कि " तूने उस चश्मे वाली लड़की को देखा है |"

"नहीं यार में भी अभी आया हुँ लेकिन तू उसके बारे में क्यु पूछ रहा है ?" विजय बोला |
"ऐसी कोई बात नहीं है , बस ऐसे ही " मैंने मुस्कराकर कहा |

मैं बार-बार बाहर की ओर देख रहा था | मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था लेकिन वो कही दिखाई नहीं दे रही थी |

कुछ देर में टीचर भी आ गए और पूछा कि " कल जो पढ़ाया पढ़कर आये हो "

"यस,सर! " सभी ने एक साथ ऐसे जवाब दिया जैसे सब पढ़ के ही आये हो |

एक घंटा होने के बाद अब जैसे टीचर की आवाज़ चुबने लगी थी और ऊपर से मिताली का न आना भी परेशान कर रहा था |

तभी टीचर ने सवाल पूछना शुरू कर दिया |

जब ऐसा होता है तो सभी ऐसा सोचते है कि कहीं मेरे से ना पूछ ले स ...हा हा और मैं भी ये ही सोच रहा था |

तभी अचानक टीचर ने अंगुली मेरी तरफ करते हुए मुझे खड़ा होने के लिए कहा |

पहले तो मैं इधर-उधर देखा फिर मैंने अपनी अंगुली को अपनी करते हुए और आँखों को बड़ी करते हुए बोला "सर ,मैं"
"हां , तुम ही" टीचर ने कहा |

मैं डरते हुए खड़ा हुआ और सोचने लगा कि कही मुश्किल सवाल ना पूछ ले कहीं|

"अच्छा बताओ, न्यूटन का थर्ड लॉ क्या है ?"

"सर न्यूटन का थर्ड लॉ ....न्यूटन का थर्ड लॉ ये होता है कि ...ये होता है कि जब कोई वस्तु ऊपर जाती है तो ..." मैं अटकते हुए भी इतना ही बोल पाया |

"चलो बैठ जाओ |" टीचर ने रहम दिखाते हुए कहा|
जैसे तैसे क्लास पूरी हुई मैं आने को आतुर हो रहा था और मिताली से बात भी तो करनी थी |

मैं घर आया तो देखा कि मम्मी शूज रैक देख रही थी तो मुझे याद आया उसमे तो मेरे क्लास टेस्ट पेपर रखे है |
जिनमे मुझे अंडा ही मिला था | हा हा... !

मैं बेड पर लेटकर मोबाइल चला रहा था | तभी मम्मी ने मुझे बुलाया और पूछा कि ये जुते तेरे है क्या?

"मम्मी तुम्हें मेरे जूतों के बारे में भी नहीं पता क्या ?"
"सच्ची बूढ़ी होती जा रही , तेरे ही है ये तो |"

"पर अरुण ध्यान से देख ये भी जुते तेरे है ?" मम्मी ने कहा |

"क्या मम्मी एग्जाम कि टेंशन मुझे है या आपको ?"
"जुते थोड़े है क्लास टेस्ट के पेपर है वो तो " मैंने कहा |

"पर बेटा यह शूज रैक में है " मम्मी गुस्से में बोली |
मैं उठकर भागा और मम्मी भी पीछे भागने लगी |

"हर पेपर में जीरो नंबर लाता है " मम्मी चिल्लाती हुई आ रही थी |
"नहीं ,नहीं चप्पल नहीं मम्मी "

"पेपर मैं अंडे लेकर आता है और क्या समझता है कि मुझसे छुपा लेगा |" मम्मी ने चप्पल फेंकते हुए कहा |

"नालायक कहीं का , ठहर जा आज नहीं बचेगा तू मेरे हाथो से |"

तभी दरवाजे पर रिंग बजने की आवाज़ आयी |
मम्मी ने कहा जा जाकर दरवाजा खोल |
"हां मम्मी जाता हुँ " मैंने कहा |

मैं मम्मी की तरफ देखते देखते दरवाज़े की ओर गया|
"जल्दी जाकर खोल दे |" मम्मी ने कहा |

जब जाकर दरवाजा खोला तो देखा की आंटी खड़ी है और उनकी आँखों में आँसु है | उनके हाथ में लड्डू थे |

मैंने जल्दी से उनके हाथ से वो डिब्बा ले लिया |
"थैंक यू आंटी " मैंने कहा |
इतना कहकर मैं एक के बाद एक लड्डू खाने लग गया |

3. सफर की शुरुआत

"क्या हुआ रो क्यों रही हो आशा ताई!!" मम्मी ने आंटी से पूछा |
"वो मेरा बेटा चिंटू सी ए पास हो गया " आंटी बोली |
"अरे तो यह अच्छी खबर है |"

"कांग्रेट्स बोलना उसे "मम्मी ने कहा |
मैं एक के बाद एक लड्डू खाता जा रहा था |
"लड्डू भी खायेगा मजे से शर्म तो आ नहीं रही होगी|"

"तो क्या मम्मी अब लड्डू भी ना खाहु में |"मैंने डिब्बा मम्मी को देते हुई कहा|

‘‘लो पकड़ो आप ही खा लो अब’’

" एग्जाम पेपर में लड्डू लाता है , नालायक कहीं का |"
"क्या यार खाने भी नहीं देते ये लोग |" ये कहते हुए में बालकनी में चला गया |

थोड़ी देर बाद मम्मी मेरे पास आयी और बोली कि देख मेरी बात सुन अपने मामा के बेटे अविनाश से कुछ सीख |

"मम्मी बुआ के लड़के रवि को भी तो देखो वो सारे दिन घर पर पड़ा रहता है और खा खा कर हाथी हो गया |
उससे तो अच्छा हु ना कम से कम | " मैं सीना चौड़ा करके बोला |

"अरे अविनाश तेरे से सिर्फ 5 महीने छोटा है और हर एग्जाम में ए वन है | बात समझ बेटा |" मम्मी ने हसते हुए कहा |

"ठीक है मम्मा ! ऐसा करो आप अविनाश को ही अडॉप्ट कर लो|" मेने मुँह बनाते हुए कहा |

"वैरी गुड आईडिया , अभी फ़ोन करती हूँ जाकर |" मम्मी ने चिढ़ाते हुए कहा |

"मम्मा में मेरी पूरी कोशिश करता हूँ ,आप चिंता मत करो |”
"पर बेटा फ़िक्र तो होती ही है ना |"मम्मी ने प्यार से कहा |
“ठीक है मम्मा !!”

मै चुपचाप खड़ा था तभी याद आया कि मिताली से बात करना तो भूल ही गया | अंदर जाकर फ़ोन उठाकर लाया |

"हेलो मिताली" मैंने मैसेज किया |
"हेलो " कुछ देर बाद रिप्लाई आया |

"आज कॉलेज क्यों नहीं आयी ?"
"वो में पहले दिन ही थक गयी थी और आने का मन भी नहीं हो रहा था |" मिताली ने रिप्लाई किया |

"अच्छा कल तो आहोगी ना ?"
"हां"
मैंने उसे बाय किया और सोने चला गया |

मै सुबह जल्दी उठ गया |मोबाइल में मैसेज देखने के बाद मैं रसोई में गया |
"जा जाकर ब्रेड ले आ " मम्मी ने कहा |
"ओके, जा रहा हूँ |"

मै गिरते उठते दुकान पर पंहुचा | मैं ब्रेड के लिए दुकानदार को बोलने ही वाला था कि तभी एक छोटी सी बच्ची आयी |

वो बहुत क्यूट थी | उसके हाथ में चालीस रूपये थे | वो आकर दुकानदर को बोली "अंकल ,मैरीगोल्ड बिस्कुट है?"

"हां , बेटा है |"
"और मोनाको"

" हां वो भी है, तुम्हे कौनसा चाइए बोलो |"
वो कुछ नहीं बोली | तभी मैंने दुकानदार को कहा कि मुझे ब्रेड दो|

तभी उसने कहा अंकल कोई सा भी दे दो |
"मुझे भूख लगी है जल्दी से दे दो !"उसने जोर से कहा |

जैसे ही दुकानदर ने उसे बिस्कुट दिए वो भागती हुई घर की ओर चली गयी |उसके चेहरे पर जो ख़ुशी थी वो देखते ही बनती थी |

मै घर आ गया ओर नाश्ता करके कॉलेज के लिए रवाना हो गया |
कॉलेज जाकर सभी दोस्तों से मिला ओर मिताली का वेट करने लगा |
कुछ देर बाद मिताली आयी मैंने हेलो किया और क्लास में चला गया |

"भाई ,ये तेरा और मिताली का क्या सीन है ?" तभी विजय ने पूछा
"यार बस फ्रेंड है |" मैंने उससे कहा |

"ना यार, कुछ छिपा रहा है तू |"
"वो मेरी क्रश है "मैंने धीरे से कहा |

"ओहो ,तो ये बात है जनाब , तू कहे तो मै कुछ करू "विजय ने हसते हुए कहा |
"ना भाई रहने दे " मैंने भी हसते हुए कहा |

क्लासेज पूरी होते ही में घर आ गया|
शाम को मैंने मैसेज किया |

"क्या कर रही हो ?"
"अरे यार कल मुझे राजगढ़ किसी काम से जाना है तो उसी की तैयारी कर रही हूँ |"
मिताली का रिप्लाई आया |

"वहां तो मुझे भी जाना है , वहाँ मुझे जॉब से रिलेटेड कोई काम है|"
"तुम कितने बजे जाओगी ?"

"शाम को 4 बजे के आस पास |" उसने रिप्लाई किया |
"अच्छा तुमको क्या काम है वहाँ ?"

"मेरी बुआ ने कोई फंक्शन रखा है तो उसी के लिए जाना है|"उसने रिप्लाई किया |

"तुम अकेली ही जा रही हो |"
"हां मै काफी बार जा चुकी हूँ | "

फिर मैंने बाय कहा और सोने चला गया |

4. रेल का सफर

मै सुबह जल्दी उठकर तैयार हो गया और जाने के लिए तैयार था |
"वहाँ पहुंच थे ही मुझे कॉल कर देना |" मम्मी ने कहा |

"ठीक है मम्मा "
"और तू रहेगा कहा वहाँ ये तो बता ?" मम्मी ने कहा |

"वो सब वहाँ जाकर देख लूंगा " मैंने कहा |
मै रेलवे स्टेशन पहुंच गया | मैं सोच कर आया था की मिताली से आज बिलकुल अनजान की तरह बीहेव करूंगा | मै जब पंहुचा तो मिताली टिकट लेकर आ रही थी | मै मिताली की तरफ बिना देखे सीधा निकल गया |

तभी मै पीछे मुड़के बोला " मैडम!"
वो पीछे मुड़के देखने लगी |

मै भी देखता रहा और कुछ नहीं बोला |
कुछ देर देखने के बाद मैंने कहा "कुछ नहीं आप जाइये |"
फिर वो भी अननोन जैसा बीहैव करने लगी |

"गुंडा कईका " उसने नाक पर हाथ फेरते हुए कहा |
"जी नहीं , आर्टिस्ट ,लवर ऑफ़ ब्यूटी |"मैंने कहा |

"हूँ " ऐसा कहकर वो चली गयी |
इसके बाद मैंने टिकट ली और उसके बाद मैगज़ीन और कुछ खाने का सामान लेकर डिब्बे मै पहुंच गया |

तभी मिताली आयी उसके हाथ में भी मैगजीन्स थी |
"हे भगवान , तुम भी इस डिब्बे में" मिताली ने कहा |

"जरा सोचो , कितनी अनोखी यह मुलाक़ात है |" मैंने हसते हुए कहा |
"शटअप " उसने मुँह बनाते हुए कहा |

"गुड नाईट , बाकि बातें दिन के उजाले में होगी|" मैंने कंबल ओढ़ते हुए कहा |
"आई सेड शटअप" उसने कहा |

ट्रैन रुकते ही मिताली जल्दी से उतरकर बाहर चली गयी |
मै भी सामान लेकर जल्दी से निकला |

बाहर आया तो देखा की एक ही टैक्सी खड़ी है |

मिताली ने जैसे ही सामान रखने की कोशिश की मैंने दूर से ही मेरा सामान टैक्सी के ऊपर फेक दिया |

"अब लगता है दूसरी टैक्सी आने में टाइम लगेगा इसलिए कैसे भी इसी में जाना पड़ेगा |" मैंने अपने आप से कहा |

" यह मेरी टैक्सी है, पहले मैंने आकर पूछा इसलिए केवल मै जाहूँगी इसमे समझे |"

"पहले मैंने सामान रखा इसलिए ये टैक्सी मेरी है " मैंने जवाब देते हुए कहा |

"हाहा ... पंगा ही तो लेना था इससे " मैंने हसते हुए मन में कहा |

"इसका सामान नीचे उतारो " मिताली ने ड्राइवर को कहा |
"खबरदार जो सामान को हाथ भी लगाया तो " मैंने ड्राइवर को हसते हुए कहा |

"अगर इन मैडम का सामान इस टैक्सी में रखा तो मै तुम्हारी लम्बी मूछे उखाड़ लूंगा |"

"अरे यार, झगड़ा आप दोनों का है | मूछों को कहा बीच में ला रहे हो|" ड्राइवर ने हसते हुए कहा |

" तुम इसकी फ़िक्र मत करो , मेरा सामान रखो वरना तुम्हारा कीमा निकाल दूंगी |" मिताली ने ड्राइवर से कहा |

"आप लोग क्यों झगड़ा कर रहे हो , आप दोनों को एक ही जगह जाना है तो साथ चल चलो ना |"ड्राइवर ने समझाते हुए कहा |
"ड्राइवर ये राजगढ़ यहां से कितनी दूर है " मैंने पूछा |

" यही कोई 10 किमी के आस पास "
"क्या , 10 किमी "मैंने चोकते हुए कहा |

कुछ दूर जाते ही ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी |
"क्या हुआ ड्राइवर , गाडी क्यों रोक दी " हम दोनों ने एक साथ बोला और एक दूसरे की तरफ देखने लगे |

उतरकर देखा तो पता चला कि गाड़ी के पीछे वाले टायर में पंक्चर था |

"देखो तुम्हारे वजन से टायर का क्या हाल हो गया |" मैंने हसते हुए मिताली को कहा |

"यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है " मिताली ने कहा |
तभी अचानक बारिश आने लगी | हम तीनो जल्दी से पास के घर में चले गए |

" इसको भी अभी आना था " मैंने जोर से कहा |
"कहीं ऐसे झगड़ते झगड़ते जो थोड़ी बहुत दोस्ती है वो ना खत्म हो जाये |" मै मन में सोचने लगा |

तभी मैं मिताली के पास गया |
"सॉरी मिताली , मैंने तुम्हे काफी परेशान किया |" मैंने माफ़ी मांगते हुए कहा |

"इट्स ओके , मुझे पहले से पता था कि तुम जान-बूझकर करके ऐसा बीहैव कर रहे हो "मिताली ने हसते हुए कहा |

हम दोनों एक दूसरे कि तरफ देख़ते हुए हसने लगे |

बारिश रुकते ही हम दोनों रोड पर आये और वेट करने लगे की किसी तरह राजगढ़ पहुंच जाये |
तभी एक बस आयी मैंने बस को रोकने के लिए हाथ हिलाया |

"क्या ये बस राजगढ़ जाएगी ?"मैंने कंडक्टर को पूछा |
"हां , ऊपर आ जाओ !"

मैं और मितली पीछे की सीट की पर बैठ गए | जब मैं बैठा तो देखा की लोग हमारी तरफ ही देख रहे है |

"तुम कुछ बोलो ना" मैंने मिताली से कहा |

"क्यों ?" मिताली ने कहा |
" बात ना करने से लोग शक करेंगे की इनकी जान पहचान ही नहीं है और मै खामखाह लेडीज सीट पर बैठ गया "| मैंने कहा |

"तो क्या बात करू?"

"जो मुँह मै आये कहो ! जैसे कहो की कल चिड़िया खाने से एक टाइगर बाहर निकल गया |" मैंने कहा |

"सच"
"सच हो या झूठ तुम तो कहो ना |" मैंने उसे कहा |

तभी सामने वाली सीट पर बैठी महिला धीरे से मुस्कराने लगी | मैं भी जबरदस्ती मुस्कराहट ला रहा था |

"अरे हां, तुम्हे एक बात तो बताना भूल ही गया | दरहसल कल मेरा एग्जाम है तो वही देकर सीधा घर चला जाहुँगा | यहां मैं किसी को जानता तो नहीं लेकिन देख लूंगा जहाँ रहने की व्यवस्था हो पाए |" मैंने मिताली को बताया |

तभी कंडक्टर आ गया और पूछा की आप दोनों की टिकट हो गयी|
" यहां से अब राजगढ़ अब कितनी दूर है ?" मैंने कंडक्टर से पूछा |
"आने ही वाला है !" कंडक्टर ने कहा |

"आप लोग टिकट ले लो " कंडक्टर ने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा |
मैंने पैसे निकले और दो टिकट ले ली | मैं बाकी के पैसे लेने लगा|
तभी मिताली ने अपना पर्स खोला और मुझे टिकट के पैसे देने लगी|

" ना रहने दो , इतना तो फ्रेंड्स के बीच चलता है |" मैंने हसते हुए कहा |
"ना तुम रख लो " उसने जोर देते हुए कहा |

"ठीक है मै ये पैसे रख लेता हूँ लेकिन अगर मैंने ये पैसे रखे तो मैं समझूँगा की तुम मुझे दोस्त भी नहीं मानती |" मैंने उदास होते हुए कहा |

"चलो ठीक है "मिताली ने पैसे वापस रखते हुए कहा |
मै बाहर की और देख रहा था तभी मिताली ने कहा "सुनो तुम मेरे साथ क्यों नहीं चले जाते | यहां कहाँ रहोगे और एक रात की ही तो बात है |"

"नहीं मिताली, तुम्हे खामखाह परेशानी उठानी पड़ेगी और तुम्हारे घरवाले क्या सोचेंगे !" मैंने कहा |

" देखो मैंने तुम्हारी बात मानी अब तुम मेरी बात मानो " उसने हसते हुए कहा |

"अच्छा अच्छा ठीक है चलो "
तभी कंडक्टर ने जोर से आवाज़ लगायी|
"राजगढ़ वाले आगे आ जाओ |"

"चलो मिताली " मैंने मिताली की तरफ देखते हुए कहा |
बस से उतरते ही मैंने राहत की सांस ली | इस जगह तक आने में कितना कुछ करना पड़ा |

"ये मेरी लाइफ के बेस्ट मोमेंट्स रहेंगे " मिताली ने कहा |
"मेरे भी " मैंने हसते हुए कहा |

"तुम यहां कितने दिन रूकोगी "

"मैं कल रात को ही वापस आ जाहूँगी " उसने कहा |
तभी याद आया मम्मी को फ़ोन करके बता देता हूँ | तो मैंने मिताली को कहा की में 2 मिनिट में मम्मी को कॉल करके आया |

"हेलो मम्मी "मैंने मम्मी को फ़ोन करके कहा |
"तू अब पंहुचा है, मैं कब से तुझे फ़ोन मिला रही थी |"

"हां मम्मा रास्ते में टैक्सी खराब हो गयी और फिर ऊपर से बारिश |"मैंने कहा |
"तू रहेगा कहा ये तो बता " मम्मी ने पूछा |

" हां मम्मा रहने की व्यवस्ता हो गयी और आप चिंता मत करना " मैंने कहा |
"चल ठीक से खाना खा लेना" मम्मी ने कहा |
"ठीक है मम्मी !" मैंने हसते हुए कहा और फिर मैंने फ़ोन काट दिया |

5. *पेपर की कठिनाई*

मैं मिताली के पास गया और हम दोनों आगे बढ़ गए |
"काफी भूख लग रही है |" मैने मिताली से कहा |
"हां चलो कुछ खाते है |" उसने कहा |

आगे जाकर हमें पतासी का ठेला दिखा |
"पतासी खा लोगी ?" मैने मिताली से पूछा|
"हां, क्यों नहीं |"

पतासी खाने के बाद हम फंक्शन में चले गए | वहाँ जाते ही मिताली ने मुझे सबसे मिलवाया |
सभी मुझ से बड़े प्यार से बात कर रहे थे |

मैं काफी थक चूका था तो मैने सबको बाय कहा और मिताली से सोने की जगह पूछी |
"बेटा तुम खाना तो खा लो " मिताली की बुआ ने मुझसे पूछा |

"नहीं आंटी भूख नहीं है |" मैने मना करते हुए कहा |

"ऐसे कैसे भूख नहीं खाना तो खाना पड़ेगा |" उन्होंने कहा |
"चलो ठीक है |" ऐसा कहकर में खाना खाने चला गया |

खाना खाकर मैं सोने चला गया और लेटते ही मुझे नींद आ गयी क्युकी मैं काफी थक चूका था |

सुबह उठा तो देखा की मिताली तैयार होकर बैठी है |
"तुम इतनी जल्दी तैयार हो गयी " मैने उसकी आँखों में देखते हुए कहा |

"हां , मेरी जल्दी उठने की आदत है |" उसने कहा |
"चलो मैं भी जल्दी से तैयार हो जाता हूँ |"ऐसा कहकर में चला गया|

"बेटा तुम्हे कुछ चाइये हो तो बोल देना " मिताली की बुआ ने कहा |
"आंटी जी थैंक्स लेकिन अब मुझे एग्जाम देने जाना है |" मैने कहा |
मैने सबको बाय बोला और एग्जाम देने के लिए निकल पड़ा |

एग्जाम सेंटर पहुंचते ही मैने देखा की सब पढ़ने में लगे हुए है और मुझे ये भी नहीं पता था की सिलेबस क्या है |

कुछ देर में एग्जाम शुरू हो गयी |

जैसे ही पेपर हाथ में आया मैने धीरे से पेपर खोला | पहला सवाल देखा जो मुझे नई आता था ऐसे करते करते मैं आगे बढ़ा कुछ सवाल आने शुरू हुए |

"इतना हार्ड पेपर क्यों बनाते है ये लोग | एक पल के लिए तो सोचा की ऐसा लिख दू की तुम ही कर लो ये सारे सवाल मुझे तो नहीं आते|" ऐसे ही कही ख्याल दिमाग आ रहे थे |

मैं ज्यादा सवाल नहीं कर पाया लेकिन जितने हो पाए मैने कर लिए और जल्दी ही करके बैठ गया |

मैं इधर उधर देखना लगा कि कौन क्या कर रहा है | सब के सब जल्दी जल्दी सवाल करने कि कोशिश कर रहे थे | तभी मैम ने बताया कि अब 5 मिनट और बची है |

मैं जल्दी से पेपर करके घर के लिए रवाना हो गया |

घर पहुंचते ही मम्मी ने कहा " भूख लगी होगी ले खाना खा ले |"
"हां मम्मा , आ रहा हूँ |" मैने कहा |
खाना खाकर मैं सो गया | जब उठा तो मम्मी ने पूछा कि पेपर कैसा गया |

"मम्मा , ठीक ही गया है |" मैने हसते हुए कहा |
फिर मैने मिताली को मैसेज किया कि वो कॉलेज आएगी कि नहीं |
"हां ,आहूँगी " मिताली ने रिप्लाई किया |

अगले दिन जल्दी से कॉलेज के लिए तैयार हो गया | कॉलेज पहुंचते ही मैं मिताली से मिला |

कुछ देर बात कि फिर बात कंजूसी कि आ गयी | मैने फिर उसे एक अंकल की कहानी सुनाई जो बहुत कंजूस थे |

एक विमल नाम का आदमी था | उनको तुम महाकंजूस भी कह सकती हो, मैने हसते हुए कहा |

वो पैसो को केवल पैसे नहीं बल्कि साक्षात लक्ष्मी मानते थे | वो जब भी कोई आता था उससे कुछ नहीं खरीदते थे और उन पैसो कि रोज़ाना पूजा करते थे |

उनकी पत्नी की मौत भी इसी वजह से हुई क्युकी उसने उनकी सही से देखभाल नहीं की |

डॉक्टर हमेशा कहता था की इन्हे फ्रूट खिलाया करो पर इतने कंजूस की एक कोड़ी तक खर्च नहीं करते थे |

उनकी केवल एक बेटी थी | जिसके एक 10 साल का लड़का था |

वो कभी कभी इनके घर रहने आते थे |
एक दिन वो जब देखने आये तो वो लड़का जब कुछ खाने के लिए मांगता तो वो मना कर देते थे |

वो उसे चोकलेट के लिए इसलिए मना कर देते थे की इससे दांत खराब होते है|

यहां तक ही नहीं वो कहता की अगर उसके दांत खराब हो गए तो डॉक्टर को और पैसे देने पड़ेंगे |

उस लड़के ने 20 रूपये मांगे तो उन्होंने मना कर दिया | ज्यादा ज़िद्द करने पर उन्होंने उसे थपड़ रख दिया |

फिर लड़की कुछ दिनों बाद अपने घर वापस चली गयी |

तो उसके दादाजी को अफसोस हुआ |

जब उन्होंने अपनी तिजोरी में जाकर देखा था तो वहाँ 50 रूपये का नोट पड़ा था तो उन्होंने उस लड़के को मनाने के लिए वो नोट रख लिया और अपनी बेटी के घर की और चल पड़े |

रास्ते से उन्होंने जलेबी ली वो भी 100 ग्राम क्युकी कंजूस जो थे |
बेटी के घर जाकर उन्होंने उसे जलेबी खिलाई और वापस घर आ गए |

ऐसा करते करते उनकी एक कार एक्सीडेंट में मौत हो गयी और उसके पैसे यही रह गए |

"तो कैसी लगी कहानी " मैने हसते हुए मिताली को कहा |
"बहुत अच्छी थी "उसने कहा |

और थोड़ी देर बात करने के बाद में घर के लिए रवाना हो गया |

6. *प्यार का इजहार*

घ र पहुंचा तो देखा की मम्मी तो घर पर नहीं थी | मैने खुद ने खाना बनाया तब तक मम्मी आ चुकी थी |
"तूने खाना कहा लिया " मम्मी ने आते ही पूछा |

"हां आप कहा गयी थी ?" मैने गुस्से में पूछा |
"मैं वर्मा जी के यहां गयी थी उनकी बेटी की जॉब लगी है उसी को लेकर बात कर रहे थे |" मम्मी ने कहा |

"तो मेरी भी बुराई जमकर की होगी आपने "

" हां मैने कहा की मेरा बेटा तो नालायक है " मम्मी ने हसते हुए कहा |
मैं कुछ नहीं बोला और अपने रूम में चला गया |

मम्मी मेरे पास आयी और बोली की मजाक कर रही थी | तू उदास मत हो |

"ठीक है "मैने हसते हुए कहा |

मैं मिताली से ऐसे ही मिलता रहा और काफी अच्छे दोस्त बन गए | फिर एक दिन मैने सोचा की आज मैं इसे बता दूंगा की **वो मेरी क्रश है** |

मैं कॉलेज पंहुचा और मिताली का वेट करने लगा | मैं हर पांच-दस मिनिट बाद टाइम देख रहा था | आज जैसे टाइम रुक सा गया था | एक मिनिट भी कही सालो के बराबर लग रही थी |

कुछ देर बाद जब मुड़के पीछे की तरफ देखा तो देखा की मिताली आ रही है | मैने हिम्मत जुटानी शुरू की |

वो ब्लू कलर की टीशर्ट में बहुत अच्छी लग रही थी लेकिन मैं आगे बढ़ा और मिताली के पास गया |
"मिताली मुझे कुछ कहना है !" मैने रोकते हुए कहा |

"बोलो " उसने कहा |
"मिताली! आई लव यू " मैने जल्दी से बोल दिया और अब मुझे बस रिप्लाई का इंतज़ार था |

"तुम्हारे आने से पहले मैं पढ़ाई केवल क्लास में टॉप आने के लिए करता था लेकिन तुम्हारे साथ रहकर मेरा पढ़ने का तरीका बदल गया | तुम्हे डांस पसंद है ना, मैं वो भी सीख रहा हूँ |

मैं कहता जा रहा था और मिताली अचंभित होकर सुनती जा रही थी|
"**तुम मेरी क्रश हो** " मैने कहा |

"अच्छा " उसने कहा |
"यू लाइक मी ?" मैने पूछा |

"याह,किसी ने पहली बार मुझे इतना परेशान किया |" मिताली ने हसते हुए कहा |
"मेरा मतलब तुम मेरी गर्लफ्रेंड बन सकती हो ?"

मिताली ने हां में जवाब दिया |
"आई मीन ट्रस्ट मी , मैं वर्ल्ड का बेस्ट बॉयफ्रेंड बन सकता हूँ ?" मैं
ना जाने इतना कुछ कैसे बोल पा रहा था |

"विल यू बी माय गर्लफ्रेंड?" मैने पूछा |
"यस " उसका रिप्लाई आया |

मैं ख़ुशी से झूम रहा था और मुझे विश्वास नहीं हो रहा था | मैं हसते हुए इधर उधर देख रहा था |
मैने उसका हाथ पकड़ा और दोनों साथ साथ बाहर घूमने चले गए |

मैं घर आ गया और मैं उसी बात के बारे में सोच रहा था | ऐसा एहसास मुझे अपनी लाइफ में पहली बार हुआ था |

अगले दिन जब मैं कॉलेज गया तो देखा की बाहर मिताली कुछ लड़कियो के साथ खड़ी थी और गॉर्ड से बहस कर रही थी |

मैं पास में गया तो देखा की एक बिल्ली काफी ऊपर बैठी थी |
"उसको नीचे उतारो कब से कह रही हूँ " मिताली ने गॉर्ड ने कहा |

"कुछ नहीं होगा उसे " गॉर्ड ने कहा |
"कुछ हो गया तो " मिताली ने कहा |

तभी मैं कही से सीढी लेकर आया |
"हटो!" मैने सभी को कहा |

मैने सीढी वहाँ लगाई और ऊपर चढ़ गया | बिल्ली को हाथ में लेकर नीचे आ गया |

"ये लो तुम्हारी बिल्ली " मैने बिल्ली देते हुए कहा |
"थैंक यू " उसने मुझे कहा |
"वेलकम!"**(खुश हूँ मैं....हां,खुश हूँ मैं....क्योंकि तुम मेरी क्रश हो)**